महार्घ्य

ज्ञानोदय छन्द

भविजन के कल्याण सु-कारक, पार्श्वनाथ जिनराज महान।
संकटहारक कष्टनिवारक, जिनको जाने सर्व जहान॥
तेइसवें तीर्थेश चरण में, शीश नवाने आया हूँ।
शुद्धातम आश्रित प्रभु गुण को, अर्घ्य चढ़ाने लाया हूँ॥

ॐ ह्रीं सर्वगुणसम्पन्नाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय महार्घ्यं.....।

ऋद्धि अर्घ्य

1. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
3. ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहिजिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
4. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहिजिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
5. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहिजिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
7. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
8. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदाणुसारीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
9. ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्णसोदाराणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
10. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
11. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
12. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वियाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
13. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चोद्दसपुव्वियाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
14. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहानिमित्तकुसलाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
15. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वणइड्ढिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
16. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
17. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
18. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
19. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

20. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
21. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
22. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
23. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
24. ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
25. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
26. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
27. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
28. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरपरक्कमाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
29. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणबंभयारिणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
30. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
31. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेलोसहिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
32. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
33. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विट्ठोसहिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
34. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
35. ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
36. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
37. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
38. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
39. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
40. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुसवीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
41. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
42. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
43. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
44. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्व सिद्धायदणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

दोहा

पूर्ण शुद्ध पारस प्रभो, जीते दुर्जय कर्म।
सीखे भविजन आपसे, समतामय जिनधर्म॥ 1॥

ज्ञानोदय छन्द

जय-जय पार्श्वनाथ गुणसागर, सर्व प्रियङ्कर जगनामी।
प्राणत स्वर्ग त्याग कर आए, नगर बनारस में स्वामी॥
पन्द्रह मास रतन शुभ बरसे, सुर ऐरावत गज लाए।
क्षीरोदधि से न्हवन कराने, पाण्डु शिला पर बैठाए॥2॥

जलते नाग-नागिनी लखकर, शीघ्र आपने बचा लिया।
तीस वर्ष में जातिस्मरण से, नश्वर सुख को त्याग दिया॥
प्रभु के संग तीन सौ नृप ने, तप संयम अंगीकारा।
लौकान्तिक सुर अनुमोदन कर, लगा रहे जय-जयकारा॥3॥

पूर्व वैर वश संवर सुर ने, बदले की मन में ठानी।
प्रभु की आत्मिक दिव्य शक्ति को, जान न पाया अज्ञानी॥
तप से विचलित करने प्रभु पर, घोर-घोर उपसर्ग किए।
मूसल-सी जलधार बहाई, शस्त्रों से बहु वार किए॥4॥

किन्तु प्रभु पर क्षमा कवच था, तन को कुछ ना छू पाया।
अंगारे बुझ गए स्वयं ही, कुछ बिगाड़ ना कर पाया॥
भिजवाए कई प्रेत उसी ने, नजर झुका सब भाग गए।
प्रभु की साम्य पवन के आगे, धूली कण भी शान्त हुए॥5॥

द्वेषाग्नि से जला क्रूर वह, आखिर प्रभु-दर पर आया।
पछताया निज दुष्कृत्यों पर, क्षमा भाव उर में लाया॥

शुक्लध्यान के बल पर प्रभु ने, पूर्णज्ञान को प्राप्त किया।
नन्त वीर्य के द्वारा स्वामी, अघातियों का नाश किया॥6॥

कुमुदचन्द्र यति ने भक्ति से, श्रद्धा सहित प्रणाम किया।
प्रतिमा प्रकटी पार्श्वप्रभु की, सबने जय-जयकार किया॥
चमत्कार लख श्री यतिवर का, जन-जन में खुशियाँ छाईं।
नृप ने जैन-धर्म स्वीकारा, धर्म-पताका फहराई॥7॥

यह चित्तौड़ नगर की घटना, स्वर्णाक्षर से अंकित है।
रचा स्तोत्र कल्याण-मन्दिरं, भव्यजनों से अर्चित है॥
इसे दिगम्बर श्वेताम्बर जन, श्रद्धा पूर्वक पढ़ते हैं।
जनम-जनम के बँधे पाप सब, तत्क्षण निश्चित कटते हैं॥8॥

बीजाक्षर युत महा स्तोत्र का, विधान जो भी करता है।
तन-मन सम्बन्धी रोगों को, पढ़ते ही क्षय करता है।
यतिवर जैसी मैं भी अपने, मन में भक्ति प्रकट करूँ।
नर से सुर फिर मुनि बनकर मैं, महा मोक्षपद प्राप्त करूँ॥9॥

दोहा

अति पवित्र इस स्तोत्र को, हृदय धरे जो भव्य।
पूर्ण होय सब कामना, पाता है गन्तव्य॥10॥

ॐ ह्रीं क्लीं-सर्वकर्मविनाशनाय-आगतविघ्नभयनिवारणाय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

घत्ता

हे पार्श्वजिनेश्वर, भव्य हितङ्कर, सारे संकट चूर्ण करो।
मैं तव गुण गाऊँ, ध्यान लगाऊँ, ''विद्यासागर पूर्ण'' करो॥

॥ इत्याशीर्वादः॥

पूज्यपाद आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागर जी महाराज की पूजन

स्थापना

(तर्ज – श्याम तेरी बंशी...)

गुरु मेरे ऋषिवर हैं गुरु भगवान्,
गुरुवर के दर्शन से मिले चारों धाम[2]
श्रद्धा से पथ सारा मैंने बुहारा,
भक्ति के गीतों से तुमको पुकारा[2]
हृदय वेदिका पर विराजो गुरु आज[2],
भक्त का निमन्त्रण स्वीकारो गुरुराज॥

ॐ ह्रीं श्री 108 आचार्यविद्यासागरमुनीन्द्र! अत्र अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री 108 आचार्यविद्यासागरमुनीन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठ : स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री 108 आचार्यविद्यासागरमुनीन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव वषट्सन्निधीकरणम्।

द्रव्यार्पण

विद्या के सिन्धु में ज्ञान है समाया,
श्रद्धा की कलशी को भरने मैं आया।
मेरे सब विकारों का करिए विनाश[2],
गुरु द्वार आया हूँ यही लेके आश॥1॥

ॐ ह्रीं श्री 108 आचार्यविद्यासागरमुनीन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

चन्दन की खुशबू से घ्राण तुष्ट होती,
गुरु- कृपा चन्दन से आत्म पुष्ट होती।
मिटे गुरु भक्ति से भव-भव का ताप[2],
गुरु नाम का ही मैं करूँ नित्य जाप॥2॥

ॐ ह्रीं श्री 108 आचार्यविद्यासागरमुनीन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं ....।

गुरुवर में आनन्द झरने झरे हैं,
अक्षय पदगामी को वन्दन करे हैं।
श्रमण संस्कृति के हैं गुरुवर मिशाल[2],
शरण पाके गुरुवर की हुए हम निहाल॥3॥

ॐ ह्रीं श्री 108 आचार्यविद्यासागरमुनीन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

भेद ज्ञान बगिया में गुरुवर विचरते,
चारित्र सौरभ से पल-पल महकते।
भक्त भ्रमर बन आया गुरु ज्ञान बाग[2],
मुझे भी पिला दो गुरु रस वीतराग॥4॥

ॐ ह्रीं श्री 108 आचार्यविद्यासागरमुनीन्द्राय कामबाणविध्वन्सनाय पुष्पं ....।

शुद्ध आत्म अनुभूति रस चख रहे हैं,
बाहर में रहकर भी आत्म लख रहे हैं।
मोक्ष की भी इच्छा न करें गुरुराज[2],
ऐसे भावलिंगी को नमन् बार-बार॥5॥

ॐ ह्रीं श्री 108 आचार्यविद्यासागरमुनीन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

गुरुवर की मूरत में प्रभु की छवि है,
बुझे हुए दीपक हम गुरुवर रवि हैं।
सारे जग में छाया तीर्थङ्कर - सा प्रभाव[2],
मोक्ष तक मिले गुरु चरणों की छाँव॥6॥

ॐ ह्रीं श्री 108 आचार्यविद्यासागरमुनीन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं ....।

जड़ कर्मों का कोई दोष नहीं है,
दुःखों का कारण राग-द्वेष ही है।
तजे मोह बन्धन हुए वीतराग[2],
गुरुवर पुकारें हे चैतन्य जाग॥7॥

ॐ ह्रीं श्री 108 आचार्यविद्यासागरमुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

पाप कर्म फल में निराशा नहीं है,
पुण्य के फलों की भी आशा नहीं है।
पाप-पुण्य फल में रहें इक समान[2],
भावी अरहन्ता को मेरा प्रणाम॥8॥

ॐ ह्रीं श्री 108 आचार्यविद्यासागरमुनीन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

नाम पद प्रसिद्धि की नहीं कामना है,
पद अनर्घ्य पाऊँ यही भावना है।
मेरे देवता देखो जरा मेरी ओर[2],
अर्घ्य मैं चढ़ाऊँ हे गुरु कर जोड़॥9॥

ॐ ह्रीं श्री 108आचार्यविद्यासागरमुनीन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं....।

जयमाला

ज्ञानोदय छन्द

स्वयं चेतना माँ के सुत हो, निज उपयोग पिताश्री है।
भाव विशुद्धि भगिनी जिनकी, भ्राता स्वानुभव ही है॥
आत्माश्रित गुण मित्र गुरु के, स्वात्म चतुष्टय गृह प्यारा।
भेदज्ञान के दीपक जलते, जग को देते उजियारा॥1॥
शुद्ध आत्म अनुभूति के स्वर, गुरु के निज गृह गूँज रहे।
स्वर लहरी सुनकर हम भविजन,श्री गुरुवर को पूज रहे॥
ध्यान सुरङ्ग खोदकर गुरुवर, एकाकी खो जाते हैं।
भक्त ढूँढ़ते रहते बाहर, कहीं नजर ना आते हैं॥2॥
ऋद्धिधारी मुनियों जैसे, गुरुवर चलते दिखते हैं।
इक निश्छल मुस्कान प्राप्त कर,पतझड़ मधुवन बनते हैं॥
जिनके परिणामों में पल-पल,स्वभाव सुरभि महक रही।
अतः गुरु के गुणोद्यान में, चिन्मय चिड़ियाँ चहक रहीं॥3॥
ज्ञानसिन्धु में डूब-डूबकर, चिन्तन के मोती देते।
सहज भाव से शिष्यगणों को, अध्यातम ज्योति देते॥
वस्त्राभूषण त्याग दिए पर, कितने सुन्दर दिखते हो।
नजर नहीं हटती मूरत से, तीर्थङ्कर से लगते हो॥4॥
ज्यों-ज्यों उम्र बीतती जाती, निजानुभूति गहराई।
आतम की अतलान्त गहनता, मेरे गुरुवर ने पाई॥
दूर किया यदि हमें चरण से, मोक्ष दूर हमसे होगा।
बड़े दोष के भागी होना, स्वीकृत तुम्हें नहीं होगा॥5॥
अतः आपको हाथ जोड़कर, इतना मात्र निवेदन है।
संग ले चलो मोक्षपुरी तक, यह जयमाला अर्पण है॥
मैं दोषों का कोष हूँ गुरुवर, आप क्षमा के सागर हो।
मैं धरती की धूल हूँ केवल, गुरुवर ज्ञान दिवाकर हो॥6॥

दोहा

जैसा ज्ञान दिया गुरु, वैसा ही है शिष्य।
अपने वंशज की गुरु, भूल सभी हो क्षम्य॥7॥

ॐ ह्रीं श्री 108 आचार्यविद्यासागरमुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

घत्ता

श्री विद्यागुरु की, गणनायक की, जो भवि पूजा नित्य करें।
सब विघ्न नशावें, शिवसुख पावें, 'विद्यासागर पूर्ण' करें॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

अर्घ्यावली

देवशास्त्र गुरु बीस तीर्थङ्कर एवं सिद्धप्रभु

ज्ञानोदय छन्द

जल फलादि वसु द्रव्य मिलाकर, अर्घ्य चढ़ाऊँ मैं स्वामी।
दर्शन ज्ञान चरित गुण आदि निज में प्रकट करूँ स्वामी॥
देव शास्त्र गुरु विद्यमान श्री बीस तीर्थङ्कर नमन करूँ।
सिद्धप्रभु का ध्यान धरूँ मैं, अनर्घ्य पद को प्राप्त करूँ॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्योऽनन्तानन्तसिद्ध-परमेष्ठिभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी एवं कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालय

ज्ञानोदय छन्द

तीन काल सम्बन्धी पाँचों, भरत और ऐरावत में।
सर्व तीस चौबीसी प्रभु को, तीन योग से वन्दूँ मैं॥
त्रिलोक में कृत्रिम-अकृत्रिम,जहाँ-जहाँ चैत्यालय हैं।
अनर्घ्य पद हित अर्घ्य चढ़ाऊँ,पा जाऊँ सिद्धालय मैं॥

ॐ ह्रीं त्रिकालसम्बन्धि-त्रिंशत् चतुर्विंशति-त्रिलोकसम्बन्धीकृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं...।

कृत्रिमाकृत्रिम जिनबिम्ब

ज्ञानोदय छन्द

ऊर्ध्व मध्य औ अधोलोक में, जितने भी हैं बिम्ब महान।
कृत्रिम और अकृत्रिम सबको,मन-वच-तन से करूँ प्रणाम॥
चतुर्निकायी देव भक्ति से, जिनका वन्दन करते हैं।
उन बिम्बों के चरण- कमल में, अर्घ्य समर्पण करते हैं॥

ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयसम्बन्धिजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं...।

समुच्चय चौबीसी का अर्घ्य

ज्ञानोदय छन्द

जड़ द्रव्यों का मूल्य किया पर, आत्म द्रव्य अनमोल रहा।
फिर भी निज को जड़ द्रव्यों से, मैं मूरख क्यों तोल रहा॥
शिवपथ की आशा ले आया, अर्घ्य चढ़ा करता वन्दन।
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर, नाश करो विधि के बन्धन॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ...।

श्री आदिनाथ भगवान्

ज्ञानोदय छन्द

मेरे पास नहीं कुछ स्वामी, कैसे अर्घ्य बनाऊँगा।
आतम धन से निर्धन हूँ मैं, अब तुम सम बन जाऊँगा॥
आदीश्वर जिनराज आज यदि, अपना भक्त बनाओगे।
सच कहता हूँ शीघ्र मुझे भी, सिद्धालय में पाओगे॥

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ...।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान्

त्रिभंगी छन्द

हम दास तिहारे, आए द्वारे, सिद्धक्षेत्र में बस जाएँ।
पद अर्घ्य चढ़ाए, शरणे आए, चन्द्रप्रभ सम बन जाएँ॥
अष्टम तीर्थङ्कर, घातिक्षयङ्कर, भव्य हितङ्कर जिनराई।
मैं पूजूँ ध्याऊँ, जिन गुण गाऊँ, श्री चन्द्रप्रभ सुखदाई॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ...।

श्री शान्तिनाथ भगवान्

ज्ञानोदय छन्द

बिन श्रद्धा के नाथ हजारों, मैंने अर्घ्य चढ़ाए हैं।
दिखा - दिखाकर इस दुनिया को, धर्मी भी कहलाए हैं॥
सारे दर को छोड़ प्रभु जी, आज आपके दर आया।
शान्तिनाथ प्रभु के चरणों में, पद अनर्घ्य पाने आया॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ...।

श्री नेमिनाथ भगवान्

नरेन्द्र छन्द

कर्म शक्ति को क्षय करने प्रभु, चरणन अर्घ्य चढ़ाया।
ध्रुव अनर्घ पद पाने का अब, अपूर्व अवसर आया॥
नेमिनाथ तीर्थङ्कर स्वामी, चेतन गृह में आना।
एक अकेला भटक रहा हूँ, शिवपथ मुझे दिखाना॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ...।

श्री पार्श्वनाथ भगवान्

हरिगीतिका छन्द

निज आत्म वैभव खो चुका हूँ, क्या चढ़ाऊँ अर्घ्य मैं।
प्रभु आपका ही हो चुका हूँ, आ गया हूँ शर्ण में॥
श्री पार्श्वनाथ जिनेश मुझको, लीजिए अपनाइए।
आवागमन से हूँ व्यथित, उद्धार मेरा कीजिए॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ...।

श्री महावीर भगवान्

(तर्ज - माता तू दया करके ...)

पर को देखा मैंने, निज को ही ना परखा।
अब सुख अनन्त पाने, सम्बन्ध तजूँ पर का॥
ज्ञायक पद पा जाऊँ, हो शक्ति प्रकट स्वामी।
प्रभु वीर दरश देना, शरणा दो अभिरामी॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ...।

आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी महाराज का अर्घ्य

सखी छन्द

श्री विद्यासिन्धु मुनीश्वर, गुरुवर भक्तों के ईश्वर।
है शान्त छवि अति प्यारी, गुण गाती दुनिया सारी॥
मन वच तन से मैं ध्याऊँ, भावों से अर्घ्य चढ़ाऊँ।
गुरुदेव चरण सिर नाऊँ, निज आतम में रम जाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री 108 आचार्यविद्यासागरमुनीन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

महार्घ्य

मैं देव श्री अरहन्त पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ, साधु पूजूँ भाव सों॥
अरहन्त भाषित वैन पूजूँ, द्वादशाङ्ग रची गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरु चरन, शिवहेत सब आशा हनी॥
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दयामय पूजूँ सदा।
जजि भावना षोडश रत्नत्रय,जा बिना शिव नहिं कदा॥
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम, चैत्य चैत्यालय जजूँ।
पनमेरु-नन्दीश्वर जिनालय,खचर सुर पूजित भजूँ॥
कैलास श्री सम्मेदगिरि, गिरनार गिरि पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि, और तीरथ सर्वदा॥
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु जय,होय पति शिवगेह के॥

दोहा

जल गन्धाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूज हूँ, बहु विध भक्ति बढ़ाय॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यो द्वादशाङ्गजिनागमेभ्यः उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्माय दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यः सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः त्रिलोकस्थित-कृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बेभ्यः पञ्चमेरु सम्बन्ध्यशीति-चैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नंदीश्वरद्वीपस्थित-द्विपञ्चाशज्-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः श्रीसम्मेदाष्टापदोर्जयन्तगिरि-चम्पापुर-पावापुरादिसिद्धक्षेत्रेभ्यः सातिशयक्षेत्रेभ्यो विद्यमानविंशति-तीर्थंकरेभ्योऽष्टाधिक-सहस्रजिननामभ्यः श्रीवृषभादि-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जलादि-महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिपाठ

शान्तिनाथ मुख शशि उनहारी, शील गुणव्रत संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमलदल लाजैं॥
पञ्चम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थङ्कर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिन नायक,नमो शान्तिहित शान्ति विधायक॥
दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामण्डल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी॥
शान्ति जिनेश शान्ति सुखदाई, जगत्पूज्य पूजौं शिर नाई।
परम शान्ति दीजै हम सबको, पढ़ैं तिन्हें पुनि चार सङ्घ को॥

पूजैं जिन्हें मुकुटहार किरीट लाके,
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शान्तिनाथ वर वंश जगत्प्रदीप,
मेरे लिए करहिं शांति सदा अनूप॥

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीन को औ यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले,कीजे सुखी हे जिन ! शान्ति को दे॥
होवै सारी प्रजा को, सुख बलयुत हो, धर्म - धारी नरेशा।
होवै वर्षा समै पै, तिलभर न रहे, व्याधियों का अन्देशा॥
होवै चोरी न जारी, सुसमय वरतै, हो न दुष्काल मारी।
सारे ही देश धारैं, जिनवर वृष को, जो सदा सौख्यकारी॥

घातिकर्म जिन नाश कर, पायो केवलराज।
शान्ति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज॥
शास्त्रों का हो, पठन सुखदा, लाभ सत्संगती का।
सद्वृत्तों का, सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का॥
बोलूँ प्यारे, वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ।
तौ लों सेऊँ, चरण जिनके, मोक्ष जो लों न पाऊँ॥
तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तब लौं लीन रहौं प्रभु, जब लौं पाया न मुक्ति पद मैंने॥

अक्षर पद मात्रा से दूषित, जो कुछ कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब,करुणा करि पुनि छुड़ाहु भव दुख से॥
हे जगबन्धु जिनेश्वर ! पाऊँ तव चरण - शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

(कायोत्सर्ग - नौ बार णमोकार मन्त्र)

विसर्जन

बिन जाने वा जानके, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तैं परमगुरु, सो सब पूरन होय॥1॥
पूजन विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करहु भगवान॥2॥
मन्त्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहुँ राखहुँ मुझे, देहु चरण की सेव॥3॥
श्रद्धा से आराध्य पद, पूजे भक्ति प्रमाण।
पूजा विसर्जन मैं करूँ, सदा करो कल्याण॥4॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हदादि-परमेष्ठिनः पूजाविधि-विसर्जनं करोमि। अपराध-क्षमापणं भवतु। यः यः यः।

(उक्त मंत्र पढ़कर ठोने पर पुष्प क्षेपण कर विसर्जन करें)

श्री जिनवर की आशिका, लीजे शीश चढ़ाय।
भव-भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाय॥

(नौ बार णमोकार मन्त्र का जाप)

परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज द्वारा रचित

मङ्गलमय जीवन बने, छा जाये सुख छाँव।
जुड़ें परस्पर दिल सभी, टले अमङ्गल भाव॥1॥
यही प्रार्थना वीर से, अनुनय से कर जोर।
हरी भरी दिखती रहे, धरती चारों ओर॥2॥
यही प्रार्थना वीर से, शान्ति रहे चहुँ ओर।
हिल-मिल कर सब एक हों, बढ़े धर्म की ओर॥3॥

विधान की इस पुस्तक में निम्नोक्त स्थानों के श्रीपार्श्वनाथ भगवान् के चित्र हैं, आप वहाँ के दर्शन अवश्य कीजिए।

1. झांसी (करगुवाँ जी)
2. सिवनी
3. टीकमगढ़
4. खिमलासा
5. केसरगंज (अजमेर)
6. कुण्डलपुर
7. डूँगरपुर (राजस्थान)
8. महुआ (सूरत)
9. बेलगछिया (कोलकत्ता)
10. विजयनगर (गुहाटी)
11. सिद्धवर कूट
12. खण्डवा
13. इन्दौर
14. हजारीबाग
15. गुना
16. हाटकेश्वर (अहमदाबाद)
17. इटारसी
18. द्रोणागिरि
19. छतरी (अजमेर)
20. आगरा
21. बीजापुर
22. जटवाड़ा (औरंगाबाद)
23. मुक्तागिरं
24. बिजौलिया
25. अन्देश्वर (राजस्थान)
26. अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ
27. चूलगिरि (जयपुर)
28. पटेरिया जी (गढ़ाकोटा)
29. बाँसवाड़ा
30. खुरई
31. वागोल (राजस्थान)
32. नरसिंहपुर
33. मनावर
34. सम्मेदशिखर जी
35. पपोरा जी
36. अहिच्क्षेत्र
37. जिन्तूर (नेमगिरि)
38. कामथाना
39. जयपुर (मानसरोवर)
40. वेलना
41. कनकगिरि
42. बड़ागाँव
43. मोराझड़ी
44. गोटेगाँव

आर्यिका रत्न 105 श्री पूर्णमति माता जी द्वारा रचित कृतियाँ

सिद्धचक्र मण्डल विधान

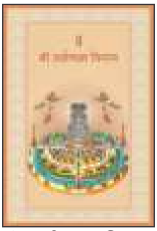
श्री अर्हच्चक्र विधान

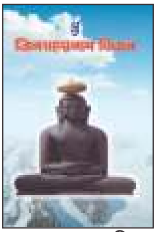
जिनसहस्रनाम विधान

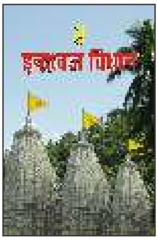
इन्द्रध्वज विधान

श्री शांतिनाथ विधान

श्री पार्श्वनाथ विधान

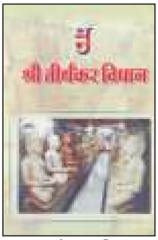
श्री तीर्थंकर विधान

श्री पंचपरमेष्ठी विधान

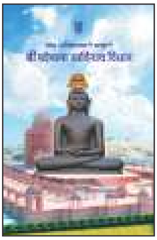
श्री बड़ेबाबा आदिनाथ विधान

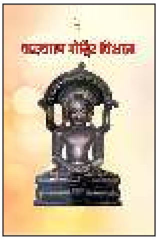
कल्याण मंदिर विधान

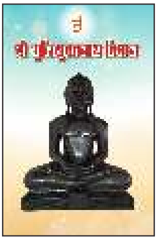
श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान

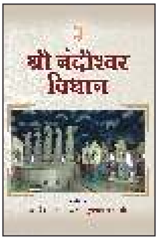

श्री नंदीश्वर विधान

चौंसठ ऋद्धि विधान

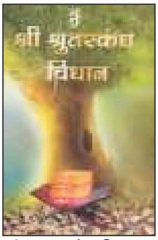
श्री श्रुतस्कंध विधान

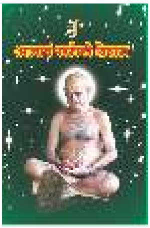
आचार्य परमेष्ठी विधान

नित्य पूजा संग्रह

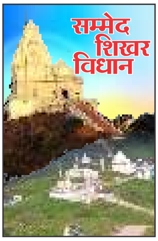

सम्मेद शिखर विधान

आर्यिका रत्न 105 श्री पूर्णमति माता जी द्वारा रचित कृतियाँ

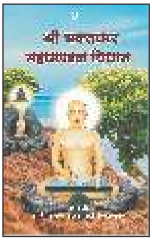

श्री भक्तामर महामण्डल विधान

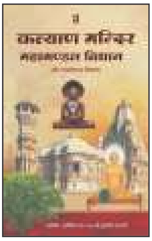

श्री कल्याण मन्दिर महामण्डल विधान

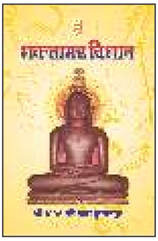

भक्तामर विधान

याग मंडल व पंचकल्याणक विधान

पंच विधान संग्रह

तीस चौबीसी विधान

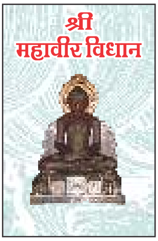

श्री महावीर विधान

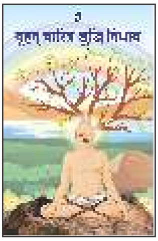

बृहद चारित्र शुद्धि विधान

तत्वार्थ सूत्र विधान

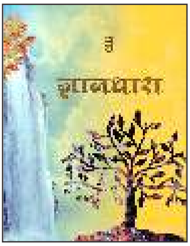

ज्ञानधारा

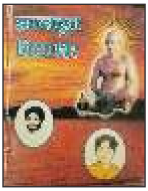

ज्ञानदूत विद्याधर

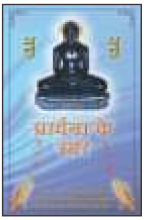

प्रार्थना के स्वर

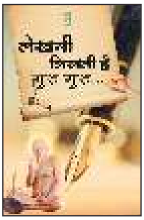

लेखनी लिखती है गुरु गुरु...

गुरु से सुना वही चुना

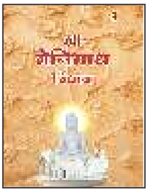

श्री नेमिनाथ विधान

प्रभु भक्ति शतक

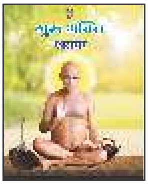

गुरु भक्ति शतक

आत्म बोध शतक

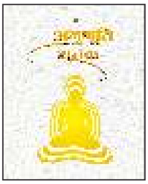

अनुभूति शतक

मेरे गुरुवर

“आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की अमृतवाणी”

- जिन और जन में इतना ही अंतर है कि एक वैभव के ऊपर बैठा है और एक के ऊपर वैभव बैठा है।
- श्रद्धा जब गहराती है तब वही समर्पण बन जाती है।
- मांगने से नहीं अपितु अधिकार श्रद्धा से मिलते हैं।
- विचारों का मूल्य होता है मात्र शब्दों का नहीं।
- शिक्षा वही श्रेष्ठ है, जो जन्म-मरण का क्षय करती है।

-: आत्म पुरुषार्थ :-

- अपने आपको जानो, अपने को पहचानो, अपनी सुरक्षा करो क्योंकि अपने में ही सब कुछ है।
- स्व की ओर मुड़ना ही सही पुरुषार्थ है।
- शरीर के प्रति वैराग्य और जगत के प्रति संवेग ये दोनों ही बातें आत्म कल्याण के लिये अनिवार्य है।
- अपने उपयोग का उपयोग, पर की चिंता में न करें।

-: भक्ति स्तुति :-

- पंच परमेष्ठी की भक्ति एवं ध्यान से विशुद्धि बढ़ेगी, संक्लेश घटेगा, वात्सल्य बढ़ेगा।

-: भक्ति महिमा :-

- भक्ति गंगा की लहर हृदय के भीतर से प्रवाहित होना चाहिए और पहुँचना चाहिए वहाँ जहाँ निस्सीमता हो।

-: मौन :-

- जो व्यक्ति वाणी को नियन्त्रित नहीं कर सकता है वह साधना नहीं कर सकता है।
- वे महान हैं, जो मुख से एक शब्द निकालने में आगे पीछे विचार करते हैं।

“आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की अमृतवाणी”

हाइकू

•

प्रश्नों से परे
अनुत्तर हैं उन्हें
मेरा नमन।

•

समर्पण में
कर्त्तव्य की कमी से
संदेह न हो।

•

खाल मिली थी
यहीं मिट्टी में मिली
खाली जाता हूँ।

•

उजाले में हैं
उजाला करते हैं
गुरु को वंदूँ ।

•

शब्द पंगु है
जवाब न देना भी
लाजवाब है।

•

सदुपयोग
ज्ञान का दुर्लभ है
मद-सुलभ।

•

गुरु कृपा से
बाँसुरी बना मैं तो
ठेठ बाँस था।

•

कली न खिली
अंगुली से समझो
योग्यता क्या है।

•

सिर में चाँद
अच्छा निकल आया
सूर्य न उगा ।

•

गुरु ने मुझे
क्या न दिया हाथ में
दीया दे दिया ।

•

डाँट के बिना
शिष्य और शीशी का
भविष्य क्या?

•

चक्री भी लौटा
समवसरण से
कारण मोह ।